

प्रदूषण बनाम राहत

आज के दिन की प्रमुख हस्ती

भारतीय सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री

जल्दा-जल्दा सोच समझकर भर डाल अधिकतर स्थान।
कॉलम पता स्थायी आते ही भंग हो गया ध्यान,
माथा ठनका, आखिर हूं मैं भी मनुसंतान।
आखिर क्यों नहीं मेरा पता स्थायी,
सोचते-सोचते आंखें भर आईं,
वह जान चुकी थी कि आखिर,
क्यों कहलाती बेदियां पराई, आखिर क्या बला है पता स्थायी।

पाठकों से अनुरोध है कि वे अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव, आलेख
कविताएं और अपनी बात कॉलम के लिए सामग्री
editoranantgyaan@gmail.com पर या
व्हाट्सएप नंबर 8894521702 व 8091450407 पर भेज सकते हैं।

जिन्ना ने किया था पाकिस्तान के वजूद पर अफसोस का इजहार

देवभूमि में लगातार बढ़ते अपराध और गिरती नैतिकता चिंताजनक

14 अगस्त विभाजन विभीषिका दिवस पर विशेष

देवभूमि हिमाचल को बचाने की करें प्रकार

ਜੈਸੀ ਪੁਨਰਾਵ੍ਰਤਿ ਨ ਹੋ, ਪਹਾੜੀ ਸੁਨਿਯੋਜਨ ਜ਼ਰੂਰੀ

सब धरती माता के लुटेरे। इन्हीं के कारण भावी भारत की पीढ़ी को रूग्ण वातावरण मिलेगा, तो वो बे-स्थिर कैसे होंगे। जो भ्रूण में पल रहे हैं तथा जिन्होंने जन्म लेना है। उनका इसमें क्या दोष ? इन्हीं के कुकृत्यों के कारण कई काल का क्रुस बन जाते हैं। यह अपराध किसी हत्या से कम नहीं है। ऐसे अपराध के लिए फांसी की सजा से कम का प्राधान्य नहीं होना चाहिए। वर्तमान और भविष्य के विकास पहाड़ों में। आवास निर्माण विकास योजनाओं के लिए दीर्घकालिक

जैसे ही बादल गरजन-बरसते हैं तो लोगों की सांसें अनहोनी के डर से अटक जाती हैं। इस वर्ष की भाँति सराज के थुनाग, मंदी हिमाचल प्रदेश, धराली, हरिपल उत्तराखंड जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में यह पुनरावृत्ति हुई है। समाचार पत्रों, यूट्यू चैनलों पर बादल फटने और पहाड़ धरकने से बस्तियों और लोगों के दफन होने के समाचार सुर्खियां बन गए हैं और लोग सहम गए हैं। प्रश्न उठता है कि भविष्य में ऐसी आपदाओं एवं धर्चटनाओं से प्रकृति और मानवता दोनों

अनंत ज्ञान
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वकर्मफलदायक

(ये लेखिका के निजी विचार हैं)

अपनी बात 

दक्खीय हिमालया प्रदेश में एक ती बरिसि, जिसमें बहुत कड़ा कहर दिखाया, जिसमें अघुत से लोग बेपर हो गए और पता नहीं कितनों की जीवन लीला खत्म हो गई, लोक लोग ऊपर से एक और बीमारी ने लोगों को अपनी चोट में लीला शुरू कर दिया है। गौरतरल है कि हाल ही में स्कूज टाइफस बीमारी से कुछ लोगों के खत्म होने की खबर सामने आया है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने जनता से रुखद सर्कट रहने की अपील की है, क्योंकि गांवों में इस बीमारी का रहता बहुत अधिक नजर आ रहा है, इसलिये लोगों को नजरे घरो व पशुशालाओं के आसपास सफाई व्यवस्था बनाए रखनी की जरूरत है। सही समय पर और सही उपचार से इस बीमारी से काफी हद तक राहत पाई जा सकती है। लोगों को इस बीमारी के बारे में अधिक से अधिक जागरूक रहने की अति आवश्यकता है, ताकि इस बीमारी की सही समय पर सही रोकथाम हो सके।

कमलेश कुमार, चंबा

लेकिन नैतिक शिक्षा, ते के संस्कार पर बहुत प्रती, दृश्य माध्यमों का चरस, अफीम और कृत्रिम नशीले पदार्थों का फैलाव न केवल युवाओं के स्वास्थ्य और भविष्य को निगल रहा है, बल्कि उनके सोचने-समझने

सुनिवायोजन रूप से कार्य करने की नितांत आवश्यकता है, क्योंकि बरसात आते ही लोगों के दिन-रात बैचैनी में डूबकर उतर जाते हैं।

जैसे ही बादल गरजते-बरसते हैं तो लोगों की ससे अन्तनी के डर से अटक जाती हैं। इस वर्ष की भाँति ससज के धुनाग, मंडाई हैमास प्रवेश थपली, हर्षिल उतराखंड जैसी प्राकृतिक अपराधों के रूप में यह पुरावृति हुई है। समाचार पत्रों, न्यूज चैनलों पर बादल फटने और पहाड़ टूटकरने से बलिष्ठों और लोगों के दफन होने के समाचार सुर्खियां बन गए हैं और लोग सडम गए हैं। प्रश्न उठता है कि भविष्य में ऐसी आपदाओं एवं दुर्घटनाओं से प्रकृति और मानवता दोनों

शिक्षा विधेयता में एक और गंभीर पहलू सामने आता है—अपराध तब और बढ़ते हैं जब शिक्षक के हाथ से अनुशासन की छड़ी छीन ली जाती है। जब बच्चों को सही-गलत का स्पष्ट बोध कराये में शिक्षक डरने लगें, जब अनुशासन का सम्बन्धी और बच्चों को समझाने को 'दंड' मालिया जाए, तब शिक्षा से डर और आदर दोनों खत्म हो जाते हैं। यह स्पष्टित बच्चों में ममर्मान और लापरवाही को बढ़ावा देती है, जो आगे चलकर गंभीर अपराधों में भी बदल सकती है। अगर हम समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए, तो 'देवभूमि' की पवित्र पहचान अपराध, चोरी और नैतिक पतन की गुंज में खो जाएगी। यह केवल पतन और पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का दायित्व है कि वह अपराध बच्चों के लिए ऐसा माहौल बनाए जहां वे न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि अच्छे इंसान भी बनें। निष्कर्षता की गहरी जड़ें ही वह सुस्का कवच हैं, जिनके रहते अपराध का बीज मर्म में पनप ही नहीं सकता।

(य लेखक के निजी विचार हैं)

जन जशरी

पर आशियाने जीवनभर की अर्जि
 मंजूरी से बना लिए हैं। प्रतिवर्ष बरसा
 में ऐसे मकानों को हिमाचल के
 विभिन्न क्षेत्रों में जमींदोज होते हु
 देखा जा रहा है। यदि योजना विभाग
 इस प्रकार के निर्माण पर निगरान
 रखेगा, तो भविष्य में होने वाली जान-
 माल की हानि पर अंकुश लगाया ज
 सकता है। मंडी, धराली हॉटल जैसे
 भव्यवाह आपदाओं से किसी स्तर तक
 बचा जा सकता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

अनंत ज्ञान

प्रकाशक, मुद्रक एवं मुख्य संपादक
डॉ. दिलीप धोकड़ द्वारा फोक्स हिमाचल
मीडिया प्रा. लि. के लिए बायोमेट्रिक
इंटरनेशनल प्र. लि. प्लॉट नंबर 8,
फेज-2 ईस्टर्न स्ट्रियट एरिया, नगरोटा बगवां,
जिला कांगड़ा (हि.प्र.), पिन नंबर-
176047 से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पत्त
समाचारों के चयन एवं संपादन के लिए
पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।

आरएनआई संघर्ष संस्था-HPHIN/25/A0284
ई-मेल : anantyaanmedia@gmail.com
फोन नंबर : 01892-299098

